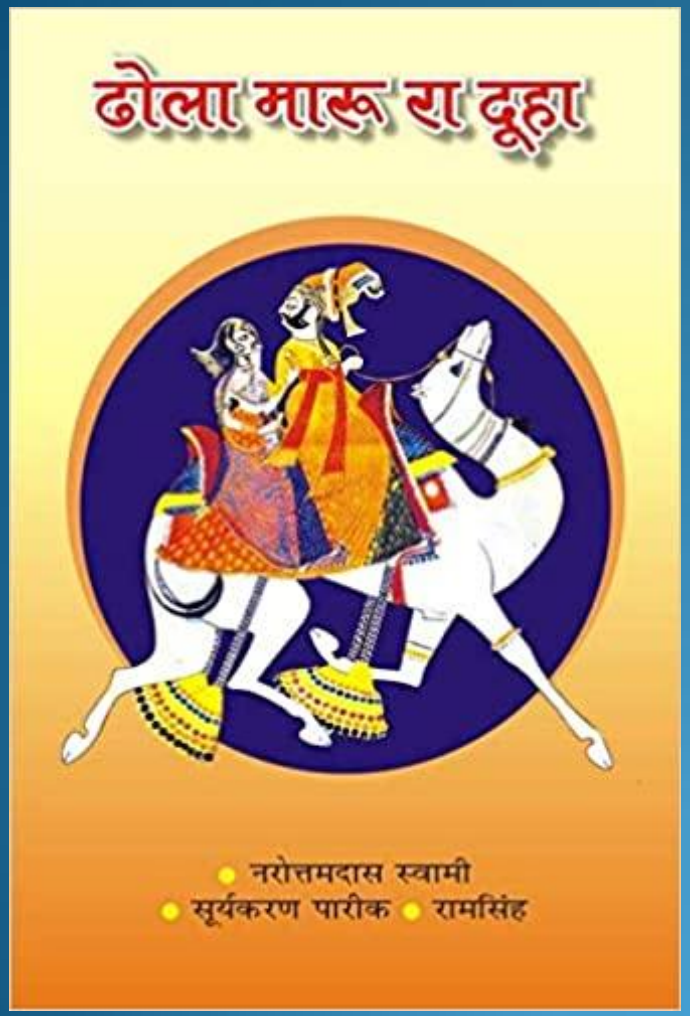

ढोला मारू रा दूहा

(दोहा 126 से 130)

डॉ. नवीन नंदवाना
हिंदी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राजस्थान)

मारवणी का संदेश - 126

पंथी, एक सँदेसड़इ, लग ढोलइ पैहचाइ।

तन मन उत्तर बाळियउ, दखिखण वाजइ।।१२६

भाव-

- हे पथिक, एक सँदेसा ढोला तक पहुँचाओं— तन और मन को उत्तरवात(शिशिरवात) ने जला दिया है, दाक्षिणत्य पवन तुम आकर चलो।

मारवणी का संदेश - 127

पंथी, एक सँदेसड़इ, लग ढोलइ पैहच्याइ।

विरह महाविस तन वसइ, ओखद दियइ न आइ।।१२७

- भाव-
- हे पथिक, एक सँदेसा ढोला तक पहुँचाओं—विषरूपी महाविष शरीर में व्याप्त हो रहा है, आकर औषधि क्यों नहीं देते ?

मारवणी का संदेश - 128

पंथी, एक सँदेसड़इ, लग ढोलइ पैहच्याइ।

विरह वाघ वनि तनि वसइ, सेहर गाइज आइ।।१२८

भाव-

हे पथिक, एक सँदेसा ढोला तक पहुँचाओं— विरहरूपी बाघ तनरूपी बन में बसता है, तुम शिखर पर आकर गर्जन करो।

मारवणी का संदेश - 129

पंथी, एक सँदेसड़इ, लग ढोलइ पैहचाइ।

धँण कँमलाँणी कमदणी, सिसहर ऊगइ आइ।।१२९

भाव-

हे पथिक, एक सँदेसा ढोला तक पहुँचाओं— प्रेयसीरूपी कुमुदिनी कुम्हला गई है, हे चंद्र तुम आकर उदय होओ।

मारवणी का संदेश - 130

पंथी, एक सँदेसड़उ, लग ढोलइ पैहच्याइ।

धँण कँमलाँणी कँमलणी, सूरिज ऊगइ आइ।।१३०

भाव-

हे पथिक,एक सँदेसा ढोला तक पहुँचाओं— प्रेयसीरूपी कुमुदिनी कुम्हला गई है, हे सूर्य तुम आकर उदय होओ।